उपसंहार

उपसंहार

प्रथम अध्याय -- विष्णु प्रभाकर : जीवन एवं साहित्य --

विष्णु प्रभाकर के जीवन तथा साहित्य पर गौर करनेपर हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि जीवन का कठिन सफर पार करके विष्णु प्रभाकर साहित्यिक क्षेत्र में सफल हुए हैं। इनका व्यक्तित्व उन्मुक्त साहित्यकार का है। उनका जीवन सहज और सुन्दर होने के कारण उनका साहित्य भी सहज और सुन्दर हो गया है। बडी कुशलतासे उन्होंने एक साथ नाटक एकांकी, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र तथा बालसाहित्य का सृजन किया है। विष्णुजी एक आधुनिक लेखक हैं। उनका व्यक्तित्व एक आत्मसन्मानी, ईमानदार लेखक का व्यक्तित्व है, जिसने लेखन को सदैव एक साधना के रूप में ग्रहण किया।

बचपन से पढने का शौक, नेकी से रहना आदि आदतों के कारण उनका मन देश - प्रेम से भरा था। भले-बुरे अनुभवों को झेलते हुए वे आज तक खडे हैं। साहित्य क्षेत्र में उनके आनेका कारण है उनका परिवेश। अपने अंतरिक द्वन्द्व को प्रकट करने के लिए उन्होंने लेखन का सहारा लिया। अत: विष्णु प्रभाकर के साहित्य में सामाजिक जीवन के पारिवारिक पक्ष का चित्रण पूर्ण रूप से हुआ है।

द्वितीय अध्याय - युगे-युगे क्रांति नाटक की कथावस्तु --

प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु का अध्ययन करने के उपरांत हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने विवाह की परंपरा में किस तरह बदलाव आ गया है इसे व्याख्यायित किया है। इसे साबित करने के लिए नाटककार ने यह

स्पष्ट किया है कि प्रत्येक पीढी का व्यक्ति प्रचलित समाज व्यवस्था,नियम आदि का लाँधकर कोई नया कदम उठाना चाहता है। प्रत्येक पीढी के लोगों को ऐसा लगता है कि वे ही क्रांतिकारी हैं फिर भी अपनी प्रौढावस्था तक आते ही सभी दकियानूसी,पुरातनपंथी,परंपरावादी और रूढिप्रिय बन जाते हैं।

नाटक की संपूर्ण कथावस्तु पाँच दृश्यों में विभाजित है। कथानक का आरंभ कौतुहलवर्धक है। इसका विकास विभिन्न पीढियों के लोगों द्वारा की क्रांति में संघर्ष वाली स्थिति विद्यमान है और नाटक की चरमसीमा पाँचवी पीढी के अनिरुध्द और अन्विता के मुक्त भोगी रूप में दिखाई देती है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कथावस्तु के गठन की दृष्टि से प्रस्तुत रचना केवल सफल ही नहीं बल्कि नाट्य-साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रंगमंच की दृष्टि से भी कथावस्तु सीधी और सरल है। दो पीढियों के बीच का फर्क दिखाने के लिए देवीप्रसाद और सूत्रधार का वार्तालाप के कारण ही हम पीढी का समय जान जाते हैं। सूत्रधार और देवीप्रसाद के संवादों में जो वक्त होता है उसी वक्त में पात्र वेशभूषा करके मंचपर आ जाते हैं और उतने ही काल में रंगभूषा की जा सकती है। स्पष्ट है की प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु नाटय तत्व से परिपूर्ण है और पूर्णत: सफल है।

<u>तृतीय अध्याय</u> - <u>युगे-युगे क्रांति नाटक में पात्र तथा चरित्र-चित्रण</u> --

प्रस्तुत नाटक के पात्र और उनके चरित्र-चित्रण का विवेचन करने के उपरांत हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि प्रस्तुत नाटक में नाटककार का यह उद्देश्य रहा है कि हर पात्र अपने अपने युग में संघर्षशील और क्रांतिकारी हैं। इस चरित्र-चित्रण में यथार्थ जीवन के चित्र है अधिकांश पात्रों का चरित्र-चित्रण और चरित्र विकास यथोचित ढंग से हुआ है। इन यथार्थ चरित्रों में कई पात्रों की दुविधापूर्ण स्थिति एवं मानसिक उतार - चढाव का अंकन भी भली प्रकार हुआ है। इन पात्रों के

चरित्रांकन में अत्यधिक स्वाभाविकता यथार्थता एवं सजीवता मिलती है। प्रस्तुत नाटक में चित्रित पाँच पीढियों के पात्रों का चित्रण नाटककार ने यथार्थ के धरातल पर किया है और इनके माध्यम से युगों-युगों से चलती आई क्रांति को परिभाषित किया है।

इसमें चित्रित कल्याणसिंह सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाश करते हैं किन्तु बेटा जब विधवा से विवाह करना चाहता है तो वे उसका विरोध करते हैं। प्यारेलाल एक विधवा से विवाह करता है, किन्तु बेटी शारदा जब सिर-पर पल्ला नहीं लेती आंदोलन में भाग ले भाषण देती है और अंतर्जातीय विवाह करती है तो वह उसका विरोधी बन जाता है। शारदा ने विलम के साथ अंतर्जातीय विवाह किया ,किन्तु उनके बेटे प्रदीप ने जैनेट से जब अंतर्धर्मीय विवाह किया तब दोनों ने जैनेट का नाम जान्हवी न करने की वजह से प्रदीप - जैनेट को घर से निकाल दिया। प्रदीप ने अंतर्धर्मीय तथा अंतर्प्रांतीय विवाह किया किन्तु अपने बेटे अनिरुध्द तथा बेटी अन्विता का उन्मुक्त व्यवहार पसंद न कर उनका विरोध किया ।निष्कर्षत: नाटक में चित्रित पाँच पीढियों के पात्र अपने जीवन के पूर्वार्ध में क्रांतिप्रिय रहे हैं किन्तु उत्तरार्ध में वे परंपरा या रूढिप्रिय बने दृष्टिगोचर होते है।

चतुर्थ अध्याय - युगे - युगे क्रांति नाटक के संवाद --

प्रस्तुत नाटक के संवादों का विवेचन करने के उपरांत हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि प्रस्तुत नाटक संवादयोजना की दृष्टि से अत्यंत सफल है। इसके संवाद सामाजिक परिस्थिति को उद्घाटित करते है। संवादों से पात्रों का अंतर-बाह्य संघर्ष दृष्टिगोचर होता है। वार्तालाप से पात्रों की प्रेम-भावना प्रकट हुई है। नाटक में एक ओर छोटे-छोटे तो दूसरी ओर दीर्घ,लम्बे-लम्बे संवाद भी पाये जाते है किन्तु ये सारे संवाद कथा विकास में सहाय्यक सिद्ध होते हैं। संवादों से ही इस नाटक के पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ स्पष्ट हुई है। निष्कर्षत: नाटक

को सफल बनाने की दृष्टि से नाटककार ने संवाद योजना का पूरा खयाल रखा है। कुशल-संवाद योजना के कारण प्रस्तुत नाटक अत्यंत सफल बन गया है।

पंचम अध्याय - युगे - युगे क्रांति नाटक का देश-काल-वातावरण तथा शीर्षक --

प्रस्तुत नाटक में चित्रित देशकाल वातावरण तथा शीर्षक पर विवेचन करने के उपरांत हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते है कि प्रस्तुत नाटक सन १८७५ से आज तक के आधुनिक युग के वातावरण को चित्रित करता है। इतने बडे कालखण्ड को लेकर लेखक ने वातावरण निर्मिती को बडे मेहनत से आसान बना दिया है। नाटक में पाँच पीढियाँ वर्णित है और पाँच पीढी के लोग अलग-अलग काल के है। नाटक में सन १८७५ का काल वर्णित है यह पहली पीढी है। दूसरी पीढी का काल है सन १९०१। तीसरी पीढी का वातावरण सन १९२०-२१ का है। चौथी पीढी के काल का वातावरण है सन १९४२ का तथा पाँचवी पीढी है स्वातंत्र्योत्तर काल की। इन पीढियों के बोल चाल से तथा रहन-सहन और रीति से हमें यह ज्ञात होता है कि काल के व्यक्ति किस तरह जीते थे। उनके सामाजिक,राजकीय,धार्मिक क्षेत्रों के बारे में क्या - क्या खयाल थे इसका भी पता चलने में देर नहीं लगती। सन १८७५ से लेकर आज तक विवाह क्षेत्र में किस तरह बदलाव आया है और कौन से काल में विवाह का क्या रूप रहा है यह देश-काल - वातावरण से ही स्पष्ट होता है।

विवाह संस्था में होते आए बदलाव के रूप पर ही यह 'युगे - युगे क्रांति' नाटक आधारित है। नाटक का शीर्षक ही ऐसा सार्थक है कि नाम से ही हम जान जाते है कि युगानु-युगे किसी क्षेत्र में बदल (क्रांति) होता आया है। सन १८७५ से लेकर आधुनिक युग तक विवाह संस्था का क्या रूप रहा है यह इसमें स्पष्ट किया है। हर काल में विवाह संस्था में बदलाव आया है जो पुरानी पीढी को मान्य नहीं है। यह बदलाव निरंतर है आगे भी रहेगा। इसी कारण निष्कर्षत:

हम कह सकते हैं कि नाटक का 'युगे-युगे क्रांति' नाम उचित और सही है। नाम और कथावस्तु में एक मेल है जो नाटक पढते ही स्पष्ट होता है। प्रस्तुत नाटक का शीर्षक कथानुकूल,विषयानुकूल,सार्थक,आकर्षक तथा समर्पक नजर आता है।

षष्ठ अध्याय - युगे-युगे क्रांति नाटक की भाषाशैली तथा उद्देश्य --

प्रस्तुत नाटक में चित्रित भाषाशैली और उद्देश्य पर विवेचन करने के उपरांत हम इस निष्कर्ष तक आते है कि नाटक में वर्णित पाँच पीढियों के कालानुसार तथा पात्रानुसार ही नाटक की भाषा है जो पात्रों के मुँह में उचित लगती है। भाषा का रूप ओजस्वी तथा उदात्त होने के कारण नाटक की शैली ढंगदार बन गयी है। भाषा में प्रवाहात्मकता,सजीवता के साथ-साथ व्यंग्यात्मकता तथा मजाक भी है। 'युगे - युगे क्रांति' नाटक की भाषा मनपर अमीट छाप डालती है।

पाँच पीढियों को लेकर यह नाटक घटित हुआ है। हर पीढी का काल अलग है। इस का कारण यह है कि जब अँग्रेजी शिक्षा का प्रसार हुआ तब पात्रों की भाषा में अँग्रेजी भाषा दिखायी देने लगी। निष्कर्षत: हम कह सकते है कि 'युगे - युगे क्रांति' नाटक की भाषा ओजस्वी और उदात्त होने के साथ-साथ सहज और सरल भी है। इस के कारण हम पात्रों के चरित्र को जान सकते हैं। भाषा में मुँहावरों और कहावतों का भी प्रयोग किया है। अँग्रेजी शब्दों के साथ-साथ संस्कृत और उर्दू शब्दों का भी प्रयोग नाटक में दिखाई देता है। निष्कर्षत: भाषाशैली की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है।

नयी पीढी और पुरानी पीढी इन दोनों में संघर्ष तो निरंतर चला आया है। दो पीढी का समय अलग-अलग होने के कारण राजकीय,सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में बदलाव आते हैं और इसी कारण दो पीढी के बर्ताव,खयाल तथा रीति-रिवाजों में भी बदलाव आ जाता है। नयी तथा पुरानी पीढी अपने समय के साथ चलती है लेकिन अपने आगे जो पीढी निर्माण होती है उसी के साथ चलना हर

पुरानी पीढी को अच्छा नहीं लगता क्योंकि उनके मूल्य अलग होते हैं। यही बात विष्णु प्रभाकर ' युगे युगे क्रांति ' नाटक के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। विवाह संस्था में आए बदलाव के कारण हर पीढी खुद को क्रांतिकारी समझती है लेकिन जब वे खुद पुराने होते हैं तब उनको भी आनेवाली पीढी पुरातनपंथी संबोधित करती है। मूल्यपरिवर्तन होने के कारण हर दो पीढी में संघर्ष रहता है। इस तरह दो पीढियों के बीच युगों-युगों से चलता आया संघर्ष और क्रांति को स्पष्ट करना नाटककार का प्रथम लक्ष्य रहा है। यह क्रांति युगों-युगों से चली आयी है और आगे भी चलती रहेगी यही बात प्रस्तुत नाटक में चित्रित की है।